अनिल शेखर "अमस"

अघोरानंद और छाया की माया

श्री सदगुरु चरण कमलेभ्यो नमः

सभी पाठकों का अभिनन्दन ....

तंत्र साधनाएं विशेष रूप से अघोर साधनाएं और उनका रहस्यमय संसार मुझे हमेशा आकर्षित करता रहा है । उसी संसार की एक काल्पनिक यात्रा पर आने के लिए आपको आमंत्रित करता हूँ .....

यह यात्रा आपको रोमांचक अवश्य लगेगी .....

इस कथा में सब कुछ मेरी कल्पना है । किसी भी प्रकार के अंधविश्वास से दूर रहें और इसके किसी भाग का अनुकरण करने की कोशिश न करें , क्योंकि कल्पना और वास्तविकता में बहुत फर्क होता है ....

अघोर साधनाओं का अपना एक अलग संसार है । जिसमें किसी प्रकार का नियम या प्रतिबंध, जो समाज में लागू है, वह लागू नहीं होता है । इसलिए कई घटनाएं और कई दृश्य आपको असहज लग सकते हैं लेकिन उससे विचलित ना हो और कहानी और लेखक की कल्पना का एक भाग समझते हुए कहानी पढ़ें ।

अंत में .....

यह कथा मनोरंजन के लिए लिखी गयी एक रचना है उसका आनंद लें ...

अनिल शेखर "अमस"

anilshekhar.amas@gmail.com

अघोरानंद और छाया की माया

अपने गुरु के निर्देशानुसार मैं देवी जगदम्बा के विराट स्वरूप दस महाविद्याओं में से एक महाविद्या भगवती तारा के शक्तिपीठ पश्चिम बंगाल स्थित रामपुर में तारा साधना करने के लिए पहुंचा ।

वहां पहुंचने के बाद मुझे अपने अग्रज भाई बनर्जी दादा के घर में रुकने का अवसर मिला । मैंने तारापीठ के श्मशान में 8 दिनों तक तारा साधना संपन्न की । उसमें विविध प्रकार के अनुभव मुझे प्राप्त हुए । भगवती तारा के सर्वश्रेष्ठ साधक महाप्रभु बामाखेपा के दर्शन का सौभाग्य भी मुझे प्राप्त हुआ | साधना के अंत में स्वयं महामाया ने अपने जाज्वल्यमान स्वरूप में मुझे दर्शन दे कर अनुग्रहित किया | इसको आप मेरी पहले की कथा **अघोरानंद और तारापीठ की छाया** में पढ़ सकते हैं ।

तारा साधना संपूर्ण होने के बाद मैं समीप ही स्थित एक चौसठ योगिनी मंदिर में पहुंचा ....

जहां पर मुझे हत्था जोड़ी पर एक विशेष साधना करने का अवसर प्राप्त हुआ । साथ ही भगवान उन्मत्त भैरव के विशिष्ट दिव्य साधना क्षेत्र में युगल साधना करने का अवसर भी प्राप्त हुआ । जिसके द्वारा मैंने चौसठ योगिनी की कृपा प्राप्त की । इस सारे प्रकरण में एक महिला साधु रेणु माई ने मेरा मार्गदर्शन किया । उन्होंने मुझे एक गोपनीय मंत्र भी प्रदान किया । जिसके द्वारा मैं किसी भी चौसठ योगिनी मंदिर के साधनात्मक प्रखंड में प्रवेश करके साधनाएं कर सकता था ।

इस संपूर्ण कथा को आप **अघोरानंद और चौसठ योगिनी मंदिर का रहस्य** नामक कथा में आप पढ़ सकते हैं ...

चौसठ योगिनी मंदिर में लगभग 3 दिन गुजारने के बाद मैं वापस अपने कमरे में लौटा । वहां पहुंचकर थकान तथा विश्राम की आवश्यकता के चलते अपने कमरे में जाकर सो गया।
अब आगे ■■■

नयी सुबह

मैं कमरे के अंदर जाकर सबसे पहले अपने बिस्तर पर लेट गया । कुछ पलों तक पिछले तीन दिनों में गुजारे गए प्रत्येक क्षण को मैंने याद किया । महामाया और पूज्य पाद गुरुदेव के श्री चरणों में नमन किया कि उन्होंने ऐसे दिव्य साधनात्मक क्षण मेरे जीवन में प्रदान किए । मैं बिस्तर पर लेट कर काफी देर तक यही चिंतन करता रहा कि मुझे कितनी अभूतपूर्व उपलब्धियां प्राप्त हुई है । उन सारी अविश्वसनीय और अद्भुत घटनाओं का स्मरण करते करते कब मैं नींद के आगोश में चला गया मुझे पता भी नहीं चला ।

नींद बहुत गहरी आई, क्योंकि पिछली दो रातें मैंने जागकर बिताई थी । पूरे दिन भर मुझे एक क्षण का भी विश्राम नहीं मिला था । लगभग 2:30 बजे मैं सोने के लिए बिस्तर पर लेट गया और बेहोशी की अवस्था में सोता रह गया । शाम को शायद बापी ने मुझे उठाने की कोशिश की होगी लेकिन मैं इतनी गहरी नींद में था कि वह वापस चला गया । अगले दिन सुबह मेरी

नींद खुली । यूँ समझ लीजिए कि लगभग बीस घंटों की नींद मैंने ली होगी । तब जाकर शरीर को कुछ राहत महसूस हुई । अभी भी शरीर का पोर पोर टूटा हुआ सा महसूस कर रहा था । सारे शरीर में दर्द जैसा आभास भी हो रहा था । लगभग बीस घंटों की नींद के बाद अब कुछ बेहतर स्थिति महसूस हो रही थी । मैंने बड़े अनमने ढंग से आंख खोली तो सामने वापी चाय लेकर खड़ा था । वह बिस्तर के बाजू में रखी हुई टेबल में चाय रखकर चला गया । साथ ही जोर से बोल कर भी गया - दादा चाय पी लेना ।

मुझे ऐसा महसूस हो रहा था कि मैं किसी अन्य ग्रह से आया हुआ एलियन हूँ । जिसे जबरदस्ती इस ग्रह पर भेज दिया गया हो | उन अद्भुत साधनाओं के अनुभव से गुजरने के बाद और चौसठ योगिनी मंदिर जैसे दिव्य और रहस्यमय साधनात्मक भूमि से वापस आने पर यह पूरा संसार बेहद बेकार अटपटा और रहने के अयोग्य लग रहा था । ऐसा प्रतीत हो रहा था, जैसे स्वर्ग में रहने वाले किसी व्यक्ति को अचानक उठाकर,

घोर नरक में भेज दिया गया हो । मेरी मानसिक अवस्था वैसी ही थी ।

इस स्थिति को आप यूं समझें कि जैसे अंतरिक्ष में जाने वाले यात्री को पृथ्वी से अंतरिक्ष में जाने से पहले अंतरिक्ष जैसी अवस्था में काफी दिनों तक रखा जाता है । उसके बाद उसे अंतरिक्ष में भेजा जाता है । वैसे ही जब वह वापस आता है, तब भी उसे उसी प्रकार की अवस्था में रखने के बाद वापस सामान्य अवस्था में लाया जाता है, ताकि वह वापस इस पृथ्वी के वातावरण में रहने के अनुकूल हो सके । उसका शरीर यहां की परिस्थितियों को स्वीकार करने लगे । मेरी स्थिति भी उसी अंतरिक्ष यात्री जैसी थी ।

लगभग 20 घंटे की नींद ने मुझे वापस यथार्थ के धरातल के आस पास पहुंचाने की भूमिका तैयार कर दी थी । इसके बाद की भूमिका नींद के अगले चरण के साथ पूरी होने वाली थी । मैंने चाय उठा कर पीना प्रारंभ कर दिया । चाय पीने के बाद खाली गिलास को मैंने स्टूल पर रखा और वापस बिस्तर पर लुढ़क गया । मुश्किल

से 5 मिनट लगे होंगे और मैं वापस गहरी नींद में चला गया ।

काली माई

शरीर की थकान दूर हो चुकी थी , लेकिन शायद अंतर्मन में कहीं कुछ थकान का अंश बाकी था । जिसे वापस सही होना था । इस बार नींद लगते ही मुझे ऐसा लगा जैसे मैं किसी सुनसान अंधेरी गुफा में पहुंच गया हूं । इसकी प्रतीति लगभग वैसी ही थी जैसी चौसठ योगिनी मंदिर के उस गुफा में रात्रि काल के समय अंधेरे काले धूँए के उठ जाने के बाद हुई थी । सब तरफ काला काला था । आसमान धरती आजू बाजू की चीजें और स्वयं मैं । सब कुछ एकदम काले रंग का लग रहा था । प्रकाश का अस्तित्व ही जैसे वहां पर शून्य हो गया था |

विज्ञान के विद्यार्थी अंतरिक्ष में एक रहस्यमय संरचना के बारे में पढ़ते हैं । जिसे ब्लैक होल कहा जाता है । ब्लैक होल अंतरिक्ष में एक ऐसी संरचना होती है जो संकुचित होते होते इतनी ज्यादा आकर्षण शक्ति से युक्त हो जाती है कि उसके आसपास से गुजरने वाले पिंड अपने आप उसके अंदर समाहित होकर लुप्त हो जाते हैं ।

उनका अस्तित्व समाप्त हो जाता है और वे भी ब्लैक होल बन जाते हैं ।

ऐसा भी माना जाता है कि प्रकाश की किरणें तक उस ब्लैक होल को भेद नहीं पाती और उसके अंदर समाहित होकर विलुप्त हो जाती हैं । मैं वैसे ही किसी अज्ञात स्थिति में पहुंचा हुआ था ।

जैसा कि आप लोग जानते होंगे मूलतः मैं एक गृहस्थ युवक था और अपने गुरु के आशीर्वाद से अघोर साधना में प्रवृत्त हुआ था ।

साधनाओं के दौरान मुझे अद्भुत , दिव्य, डरावने, रहस्यमय और अविश्वसनीय , हर प्रकार के अनुभव हो चुके थे । इसलिए मैं एक ऐसी स्थिति में आ चुका था जहां पर अब मुझे कोई भी चीज अजीब नहीं लगती थी । या यूं कह लीजिए कि मेरा मस्तिष्क अब इतना खुल चुका था कि मैं किसी भी चीज के घटित होने की संभावना को स्वीकार करने के लिए बिल्कुल तैयार स्थिति में रहता था ।

सामान्य गृहस्थ भाषा में हम कहें तो एक उदाहरण से मैं इसे समझा लूंगा कि बीस वर्ष का युवक अगर हमारे आसपास है तो हम ऐसा सोचते हैं कि वह अभी चालीस पचास साल तो कम से कम और जिएगा । यदि अचानक उसकी किसी अज्ञात कारण से मृत्यु हो जाए । तो हम एक शब्द में कहें तो ऐसी स्थिति में अपने आप को पाते हैं जिससे ऐसा लगता है कि कोई ऐसी घटना घटित हो गई जो लगभग असंभव थी । दूसरी ओर अगर आप साठ पैंसठ साल से ऊपर के किसी व्यक्ति को जानते हैं जो कि अच्छा खासा चलता फिरता भी हो तब भी अचानक उसकी मृत्यु हो जाने पर हम उसे सहजता से स्वीकार कर लेते हैं । क्योंकि साठ साल की आयु के बाद मृत्यु के करीब पहुंच जाना एक सामान्य घटना के रूप में स्वीकार कर चुके होते हैं ।

मैं ठीक वैसे ही कई प्रकार की घटनाओं को भी सहज स्वीकार करने की स्थिति में पहुंच चुका था । उन सबके बावजूद यह काले रंग का मेरे

अस्तित्व को समाप्त करने वाला परिवेश मुझे बेहद असहज करने के लिए पर्याप्त था ।

काफी देर तक मैं इस प्रतीक्षा में रहा कि उस अंधेरे में कहीं कोई रोशनी....

कहीं कुछ प्रकाश का बिन्दू....

कहीं कुछ आकृति.... कुछ तो दिखाई देगी !

लेकिन कुछ भी दिखाई नहीं दिया !

घुप्प अंधेरे जैसी न जाने क्या चीज थी !

कक्ष कहूं !

अंतरिक्ष कहूँ, ब्लैक होल कहूँ ? या क्या कहूँ ?

क्योंकि उसकी कोई आकृति तो मुझे नहीं दिख रही थी !

चारों और सिर्फ कालापन दिखाई दे रहा था ।

ऐसा लग रहा था जैसे मैं किसी काजल की कोठरी में आ गया हूं ।

घबराहट की वजह से मुझे बेचैनी सी हो रही थी कि यह कैसी जगह पर मैं पहुंच गया हूं ?

यह स्थिति लगभग एक डेढ़ घंटे तक रही होगी ।

महाकाली का दिव्य स्वरूप

उसके बाद वह काला प्रकाश नीले रंग में बदलने लगा । उसके बीच में भगवती महाकाली का मुस्कुराता हुआ बिंब स्पष्ट हुआ ।

संपूर्ण श्याम वर्ण की स्वामिनी अद्भुत तेजस्वी उस बिम्ब की आंखों से करुणा का सागर जैसे उमड़ रहा था ।

मुझे ऐसा लगा जैसे मुरझाते हुए पौधे को पानी की फुहार पड़ने से लगता होगा.....

जैसे मुर्दे मे प्राण आ गए हों.....

उनकी आंखों से झलकता हुआ वात्सल्य ठीक वैसा ही था जैसे एक नन्हे शिशु को देखकर उसकी माता की आंखों में झलकता है ..... वह नन्हा शिशु वात्सल्य भरी निगाहों को अपनी ओर ताकता देख स्वयं आश्वस्त हो जाता है और फिर निश्चिंत होकर खेलने लगता है....

उन क्षणों में मेरी स्थिति भी ठीक वैसी ही थी .....

संपूर्ण ब्रह्मांड की स्वामिनी महाकाल पत्नी भगवती महाकाली का अद्भुत तेजस्वी बिंब मेरे सम्मुख स्पष्ट था .....
वे क्षण मेरे जीवन की धरोहर हैं .....
क्योंकि उन क्षणों में मैंने जो महसूस किया उसे शब्दों में अभिव्यक्त कर पाना संभव नहीं है !
कुछ क्षणों तक महामाया की आंखें उसी प्रकार से मुझ पर करुणा की वर्षा करती रही.....
उस करुणा के रस की बौछार से मैं संतृप्त होता हुआ !

हृदय के अंतिम छोर तक उस करुणामयी मातृत्वपूर्ण दृष्टि निक्षेप को महसूस करता हुआ बैठा था !

अचानक मुझे ऐसा लगा जैसे मेरे हृदय के अंदर से उस महामाया की स्तुति में कुछ प्रस्फुटित होना चाहता है.....

ऐसा लगा जैसे महामाया स्वयं मुझ जैसे अज्ञानी साधक के मुख से स्तुति बनकर मुखरित होना चाह रही हो .....

मेरे मुख से उनके श्री चरणों में तर्पण के रूप में
यह महाकाल रमणी स्तोत्र समर्पित हुआ.....

महाकाल रमणी स्तोत्र

शवासन संस्थिते महाघोर रुपे ,
महाकाल प्रियायै
चतुःषष्टि कला पूरिते |
घोराट्टहास कारिणे प्रचण्ड रुपिणीम,
अम्बे महाकालीम
तमर्चयेत सर्व काले ॥

मेरी अद्भुत स्वरुपिणी महामाया जो शव के आसन पर भयंकर रुप धारण कर विराजमान है, जो काल के अधिपति महाकाल की प्रिया हैं, जो चौंषठ कलाओं से युक्त हैं, जो भयंकर अट्टहास से संपूर्ण जगत को कंपायमान करने में समर्थ हैं, ऐसी प्रचंड स्वरुपा मातृरुपा महाकाली की मैं सदैव अर्चना करता हूं |

उन्मुक्त केशी दिगम्बर रुपे,
रक्त प्रियायै
श्मशानालय संस्थिते ।
सद्य नर मुंड माला धारिणीम,
अम्बे महाकालीम
तमर्चयेत सर्व काले ॥

जिनकी केशराशि उन्मुक्त झरने के समान है ,जो पूर्ण दिगम्बरा हैं, अर्थात हर नियम, हर अनुशासन,हर विधि विधान से परे हैं , जो श्मशान की अधिष्टात्री देवी हैं ,जो रक्तपान प्रिय हैं , जो ताजे कटे नरमुंडों की माला धारण किये हुए है ऐसी प्रचंड स्वरुपा महाकाल रमणी महाकाली की मैं सदैव आराधना करता हूं |

क्षीण कटि युक्ते पीनोन्नत स्तने,
केलि प्रियायै
हृदयालय संस्थिते।
कटि नर कर मेखला धारिणीम,
अम्बे महाकालीम
तमर्चयेत सर्व काले ॥

अद्भुत सौन्दर्यशालिनी महामाया जिनकी कटि अत्यंत ही क्षीण है और जो अत्यंत उन्नत स्तन मंडलों से सुशोभित हैं, जिनको केलि क्रीडा अत्यंत प्रिय है और वे सदैव मेरे हृदय रूपी भवन में निवास करती हैं . ऐसी महाकाल प्रिया महाकाली जिनके कमर में नर कर से बनी

मेखला सुशोभित है उनके श्री चरणों का मै सदैव अर्चन करता हूं ||

खड्ग चालन निपुणे रक्त चंडिके,

युद्ध प्रियायै युद्धभूमि संस्थिते ।

महोग्र रूपे महा रक्त पिपासिनीम,

अम्बे महाकालीम तमर्चयेत सर्व काले ॥

देव सेना की महानायिका, जो खड्ग चालन में अति निपुण हैं, युद्ध जिनको अत्यंत प्रिय है, असुरों और आसुरी शक्तियों का संहार जिनका प्रिय खेल है,जो युद्ध भूमि की अधिष्टात्री हैं , जो अपने महान उग्र रूप को धारण कर शत्रुओं का रक्तपान करने को आतुर रहती हैं , ऐसी मेरी मातृस्वरूपा महामाया महाकाल रमणी महाकाली को मै सदैव प्रणाम करता हूं |

मातृ रूपिणी स्मित हास्य युक्ते,

प्रेम प्रियायै प्रेमभाव संस्थिते ।

वर वरदे अभय मुद्रा धारिणीम,

अम्बे महाकालीम

तमर्चयेत सर्व काले ॥

|| श्री निखिलेश्वर चरणार्पणम ||

जो सारे संसार का पालन करने वाली मातृस्वरूपा हैं, जिनके मुख पर सदैव अभय भाव युक्त आश्वस्त करने वाली मंद मंद मुस्कुराहट विराजमान रहती है , जो प्रेममय हैं जो प्रेमभाव में ही स्थित हैं , हमेशा अपने साधकों को वर प्रदान करने को आतुर रहने वाली ,अभय प्रदान करने वाली माँ महाकाली को मै उनके सहस्त्र रूपों में सदैव प्रणाम करता हूं |

यह सब कुछ मेरे गुरु के चरणों मे सादर समर्पित है ...

उन क्षणों में मैं समझ पाया कि जब भगवती की कृपा होती है .....

जब महा नील सरस्वती साधक के ऊपर कृपालु होती है.....

तो अज्ञानी से अज्ञानी चरवाहा भी कालिदास जैसा महाकवि बन जाता है .....

उसके अंदर से कवित्व का प्राकट्य होता है.....

शब्दों और साहित्य के अद्भुत विराट संसार का सृजन होता है.....

क्योंकि वही तो शब्दों का मूल है.....

वही तो शब्दों का सार है.....

वही तो शब्दों का अर्थ है .....

!!! वही तो स्वयं शब्द है !!!

स्कूल के बाद मैंने कभी संस्कृत पढ़ी नहीं थी | मंत्र जाप पूजा पाठ के अलावा इस भाषा पर मेरी कोई बहुत ज्यादा पकड़ नहीं थी | लेकिन उन क्षणों में जिस सहजता से मेरे मुंह से यह स्तुति निकली उससे मेरा यह विश्वास और प्रबल हो गया कि जब भगवती की इच्छा होती है तो कुछ भी असंभव नहीं है.....

शांत मन

भगवती महाकाली के दिव्य दर्शन के बाद मन पूरी तरह शांत हो गया | मुझे ऐसा लगने लगा जैसे मैं दुनिया का सबसे भाग्यशाली व्यक्ति हूँ | मेरे अंदर अद्भुत ऊर्जा का संचार होने लगा | मैं स्वयं को पूर्ण तेजस्विता युक्त महसूस करने लगा | उसके बाद मैं फिर से गहरी नींद में चला गया....

जब मेरी नींद खुली मैंने घड़ी देखी | उस समय सुबह के दस बज चुके थे। लगभग सात बजे के आसपास बापी ने मुझे चाय पिलाई थी । उस हिसाब से 3 घंटे गुजर चुके थे | मैं उठा और नित्य कर्मों से निवृत्त होकर स्नान आदि करने लगा । वापस आया तो दादा भी वापस आ चुके थे । मैंने दादा को प्रणाम किया । दादा ने मुझे अपने साथ आने का इशारा किया । मैं उनके पीछे पीछे चल पड़ा । नाश्ता रखा हुआ था हम दोनों ने नाश्ता किया ।

दादा ने मुझसे पूछा - तीन दिन तुम कहां रहे ? मैं उन्हें द्वारका नदी के तट पर मिले हुए साधु और माई के बारे में पहले ही बता चुका था ।

मैंने बताया - मैं हत्था जोड़ी की साधना के लिए गया हुआ था ।

उन्होंने पूछा - साधना हो गई ?

मैंने सहमति में सर हिलाया ।

नाश्ता करने के बाद वह मुझे अपने साधना कक्ष में ले गए । वह रविवार का दिन था । उनके स्कूल की भी छुट्टी थी । वापी उस दिन पिक्चर जाने के मूड में था । उसने दादा को और मुझे मनाने की बड़ी कोशिश की लेकिन हम दोनों नहीं माने इसलिए वह अकेला पिक्चर जाने वाला था । दादा ने उसे कुछ पैसे दिए और लगभग 10:45 बजे वह हम दोनों को घर में अकेला छोड़कर पिक्चर देखने चला गया । उसका शो 12 बजे से था और चार बजे तक वह वापस नहीं आने वाला था ।

दादा मुझे अपने साधना कक्ष में ले गए । साधना कक्ष में देवी धारा की स्वर्णमई प्रतिमा रखी हुई थी । उसे देखते ही मैंने दंडवत प्रणाम किया और दादा के आसन पर बैठने का इंतजार करने लगा । साधना कक्ष में एक तख्त लगा

हुआ था । जिस पर शायद दादा साधना पूर्ण हो जाने के बाद सोया करते थे । उसी तख्त के बाजू में एक सोफासेट जैसा फर्नीचर भी लगा हुआ था । किसी के आने पर सोफे पर बैठाकर आमने-सामने चर्चा भी की जा सकती थी। टेबल के ऊपर किताबें तथा अन्य सामान मौजूद थे । दादा उसी टेबल पर लिखने का काम करते रहे होंगे । मैं सारी चीजें अभी बड़े गौर से देख रहा था |

शाबर मंत्र

दादा ने मुझसे पिछले 3 दिन की घटनाओं के बाद में पूछा | मैंने उन्हें विस्तार से सारी चीजें बताई । दादा ने अपने आसन के नीचे से एक किताब निकाली और उसे मेरी तरफ बढ़ा दिया । वह किताब साबर मंत्र से संबंधित थी । मैंने इसके पहले साबर मंत्रों का प्रयोग नहीं किया था । उनके बारे में सुना जरूर था कि वह सिद्ध करने में सरल भी होते हैं । वे किसी प्रकार का दुष्प्रभाव साधक के ऊपर नहीं डालते हैं ।

जैसा कि आप लोग जानते होंगे कि बनर्जी दादा मेरे अग्रज गुरु भाई थे । इसलिए साधना के विषय में मैं उनसे खुलकर चर्चा कर लिया करता था और वे तदनुसार मेरा मार्गदर्शन भी करते थे । यहां एक बात मैं स्पष्ट कर देना चाहूंगा कि जो साधक होते हैं उनको अपने साधनात्मक अनुभव केवल अपने गुरु के सामने ही प्रकट करने चाहिए । यदि आप साधना काल में या उसके बाद अपने अनुभव को किसी को भी साझा कर देते हैं तो आपके अनुभवों की तीव्रता कम हो जाती है

। या यूं समझ लीजिए कि आपको कम अनुभव प्राप्त होंगे ।

इसी बात को ध्यान में रखते हुए आमतौर पर उच्च कोटि के साधक अपने अनुभवों को किसी के सामने प्रकट नहीं करते हैं । वे सदैव सामान्य बने रहने की कोशिश करते हैं । यदि कोई भी साधक अपने आप को बहुत ज्यादा सिद्धि प्राप्त बताने का दिखावा करता हुआ दिखे तो आप तत्काल समझ जाएं कि वह फर्जी साधक है । इस बात की 99% संभावना है कि उसे किसी प्रकार की सिद्धि प्राप्त नहीं होगी ।

खैर.....

साबर मंत्र साधनाओं से संबंधित उस किताब में अनेक प्रकार की साधनाएं दी हुई थी | मैं उस किताब को पलट कर देखने की कोशिश कर रहा था | तभी बनर्जी दादा ने मुझे आवाज दी | बनर्जी दादा अपने आसन पर बैठ चुके थे | मैंने किताब बगल में रखी और उनके पास जाकर नीचे बैठ गया |

उन्होंने मुझे बताया - अघोरानंद ! यह साबर मंत्रों पर लिखी हुई एक किताब है | जो मैं तुम्हें दे रहा हूं | इस किताब के अंदर अनेक साधनायें दी हुई है | जो कि सामान्यतः गृहस्थों के लिए बड़े काम की है | तुम्हारे जीवन में अनेक ऐसे लोग आएंगे जो कई प्रकार की समस्याओं से पीड़ित होंगे उनके समाधान के लिए इनमें से कई प्रयोग तुम्हारे काम आएंगे | यह सारे प्रयोग बेहद सरल है और जल्द ही सिद्ध हो जाते हैं |

मैंने उनसे पूछा - दादा ! साबर मंत्रों की क्या जरूरत है ? मेरे पास तारा माई का मंत्र है | क्या उससे समस्याओं का समाधान नहीं निकल पाएगा ?

दादा मुस्कुराए और उन्होंने कहा - एक ही धातु होती है लोहा या स्टील | जिससे तलवार भी बनती है , सब्जी काटने का चाकू भी बनता है और कपड़े सिलने की सुई भी बनती है | क्या तुम सब्जी काटने के चाकू से कपड़ा सिलने का काम कर सकते हो ?

मैं समझ गया कि दादा क्या कहना चाहते हैं मैंने सहमति में सिर हिलाया | फिर पूछा - दादा इनकी विशेषता भी बताओ |

बनर्जी दादा ने बताया - महादेव भगवान शिव ने ही साबर मंत्रों की रचना की है जिसे गुरु गोरखनाथ ने संसार को प्रदान किया | जहां विभिन्न देवी-देवताओं के मंत्र संस्कृत में होते हैं वही उनके साबर मंत्र स्थानीय भाषा में होते हैं | उदाहरण के लिए जैसे तुम छत्तीसगढ़ से आते हो तो वहां के साबर मंत्र छत्तीसगढ़ी भाषा में लिखे हुए मिलेंगे | अभी तुम पश्चिम बंगाल में बैठे हो तो यहां पर स्थानीय तांत्रिकों के द्वारा प्रयोग किए जाने वाले मंत्र बंगाली भाषा में मिलेंगे |

मैंने पूछा - जब संस्कृत में मंत्र उपलब्ध है तो स्थानीय भाषा में साबर मंत्रों की जरूरत क्यों पड़ी ?

उन्होंने बताया - संस्कृत भाषा थोड़ी क्लिष्ट भाषा है और उसे सीखने के लिए समय की आवश्यकता होती है | जिसके चलते सभी प्रदेशों और क्षेत्रों के गांवों तक उस भाषा की

पहुंच नहीं है | संस्कृत मूल रुप से पंडितों मंदिरों और गुरुकुल में सीमित होकर रह गई थी |

मैने पूछा - गुरु गोरखनाथ के बारे मे भी कुछ बताइये |दादा बोले - तो सुनो |

गुरु गोरखनाथ

गोरखनाथ जी के गुरु मत्स्येन्द्रनाथ एक बार भिक्षा मांगने एक गाँव में गए | उस गाँव में एक स्त्री को संतान नहीं हो रही थी उसने गुरु मत्स्येन्द्रनाथ के चरण पकड़ लिए और अपनी समस्या के समाधान की प्रार्थना की |

उस स्त्री की करुण याचना से द्रवित गुरु मत्स्येन्द्रनाथ का दिल पिघल गया और उस स्त्री की प्रार्थना स्वीकार करते हुए गुरु मत्स्येन्द्रनाथ ने एक चुटकी भभूत दी और पुत्र प्राप्ति का आशीर्वाद देकर चले गए | इस घटना को बारह साल बीत गए | फिर एक दिन मत्स्येन्द्रनाथ जी उसी गाँव मे पहुंचे |

उन्हे अपने आशीर्वाद का स्मरण हुआ तो उस बालक को देखने उस स्त्री के घर जा पहुंचे | दरवाजे पर खड़े होकर उन्होने आवाज़ लगाई | उस महिला के बाहर आने पर उससे उसके बच्चे के बारे में पूछा और उस बच्चे को दिखाने को कहा |

उस स्त्री ने बारह साल बाद बाबा को सामने देखा तो वह संकोच मे पड़ गयी | वह स्त्री गुरु मत्स्येन्द्रनाथ के सिद्धि से अनजान थी | जब उसने अपनी सहेलियों से इस भभूत की चर्चा की तो उन्होने उसे टोक दिया | उसे कहा कि क्या पता उसमे क्या मिला हो | इसलिए उस महिला ने डरकर गुरु मत्स्येन्द्रनाथ द्वारा दी हुई भभूत खाने की जगह गोबर में फेक दिया था | गुरु मत्स्येन्द्रनाथ की सिद्धि इतनी ताक़तवर थी कि उसका भभूत निष्फल हो ही नहीं सकता था |

उस स्त्री ने अपने पुत्र उत्पन्न ना होने की बात बताते हुए उस भभूत को गोबर में फेकने की बात बता दी | उसकी बात सुनकर गुरु मत्स्येन्द्रनाथ उस गोबर के स्थान पर पहुंचे और बालक को आवाज़ दी - बच्चा ! बाहर आ जा .....

गुरु मत्स्येन्द्रनाथ के आवाज़ देते ही उस गोबर डालने की जगह से एक सुंदर आकर्षक बालक बाहर निकला और हाथ जोड़कर गुरु मत्स्येन्द्रनाथ के सामने खड़ा हो गया |

गो के द्वारा रक्षित होने के कारण गुरुदेव ने उन्हे गोरक्ष नाथ नाम दिया | उसको गुरु मत्स्येन्द्रनाथ अपने साथ लेकर चले गए | बाद मे यही बालक बड़ा होकर अघोराचार्य गुरु गोरखनाथ बने और विश्व में प्रसिद्ध हुए |

गुरु गोरखनाथ ने शक्ति के प्रवाह को निरंतर आगे बढ़ते रहने देने के लिए स्थानीय भाषाओं में मंत्रों की रचना की | इसके कारण गांव-गांव तक इन मंत्रों की पहुंच बनी और विभिन्न प्रदेशों में अलग-अलग प्रकार के मंत्रों का प्रादुर्भाव हुआ |

शाबर मंत्र तथा उनका विस्तार

साधकों के द्वारा उनका उच्चारण और जागरण किए जाने से उनकी शक्ति में भी बढ़ोतरी होती गई | साधना की यह विधि शाबर साधना के नाम से प्रचलित हुई |

इसके मंत्र बोलने में सरल है और इनके साथ विभिन्न प्रकार के न्यास तथा अन्य कर्मकांड नहीं जुड़े हैं | इसलिए सामान्य आदमी भी इसे आसानी से सिद्ध कर पाता है | यह एक अलग बात है कि साबर मंत्र साधनाओं में सरलता होने की वजह से इनकी सिद्धियां बहुत प्रबल नहीं होती | यह सामान्य जीवन में पडने वाली जरूरतों को पूरा करने में पूर्णत: सक्षम है | उदाहरण के लिए पति पत्नी के बीच होने वाले झगड़ों का निपटारा कहिए या फिर व्यापार से जुड़ी हुई समस्या या किसी प्रकार की नजर लगने से बच्चों में कोई परेशानी का होना ! यह सब समस्याएं बड़ी आसानी से शाबर मंत्रों के द्वारा हटाई जा सकती है | इसके अलावा बिच्छू काटना, सांप काटना, कुत्ता काटना सब सामान्य घटनाएं हैं | जो गांव में होती रहती

है ! इनके विष को उतारने के लिए भी साबर मंत्रों का प्रयोग होता है | इनके चमत्कारी प्रभाव भी दिखाई पड़ते हैं | इसलिए तुम ऐसा कह सकते हो कि साबर साधना सामान्य जन की आवश्यकता की पूर्ति करने का एक सरल माध्यम है |

उन्होने आगे कहा - तुम्हें गुरुदेव ने साधनाओं को जनसामान्य तक पहुंचाने के लिए एक माध्यम के रूप में चुना है | इसलिए तुम्हें इन साधनाओं की जानकारी भी होनी चाहिए और इन्हें सिद्ध करने का प्रयास भी करना चाहिए |

मैंने पूछा - मुझे इसके लिए क्या करना होगा ?

उन्होंने कहा - तुम्हें गोरखपुर जाकर गोरक्ष पीठ में दर्शन करना है और गुरु गोरखनाथ के मंत्र का वहीं पर जाप करना है |

मैंने उसे स्वीकार किया और उनसे अनुमति लेकर अपने कमरे में आ गया | मैं पंद्रह दिनों की छुट्टी पर पश्चिम बंगाल स्थित तारापीठ की यात्रा पर आया था | लगभग नौ दिन मुझे भगवती तारा महाविद्या की साधना करने में लग गए | नौवें

दिन में रेणु माई के साथ चौसठ योगिनी मंदिर की ओर निकल गया था | वहां पर मुझे तीन दिन लगे | इस प्रकार से मेरे बारह दिन व्यतीत हो चुके थे | मेरे पास कुल जमा तीन दिन बाकी थे और इन तीन दिनों में मुझे क्या करना है ? यह अभी तय नहीं था , लेकिन आगे का टारगेट मिल गया था | इसके बाद मुझे गोरखपुर जाना है और साबर मंत्रों की साधना करनी है |

गोरख साधना

मैं इसी सोच में बैठा हुआ था कि अब मैं गोरखपुर जाऊंगा तो उसका रास्ता एकदम दूसरी तरफ है और वापस दुर्ग जाने का मेरा रिजर्वेशन पहले से हो चुका है तो अब क्या किया जाए .....

यही सोचते सोचते मुझे लगभग 1 बज गए | दादा ने मुझे खाने पर बुलाया | वापी खाना बना कर गया था | हम दोनों ने बैठकर खाना खाया |

दादा ने मेरे चेहरे पर परेशानी की लकीरे देखी तो पूछा - क्या हुआ तुम इतने चिंतित क्यों हो ?

मैंने कहा - दादा मेरे पास तीन दिन है | अगर मैं ट्रेन से गोरखपुर जाऊंगा तो फिर दूसरे रूट को पकड़ना होगा ,जबकि मेरा रिजर्वेशन तीन दिन बाद का दुर्ग तक के लिए है | मैं सोच रहा था कि अगर किसी तरह से मैं गोरखपुर पहुंच पाता तो इन तीन दिनों में कम से कम एक या दो दिन मेरे काम आ सकता था |

दादा ने कहा - तो क्या तू आज ही गोरख साधना करना चाहता है ?

मैंने कहा - जब आपने मुझे विधि दे दी है तो अगर संभव होता तो मैं आज से ही प्रारंभ कर लेता | क्या यह साधना तारापीठ पर नहीं हो सकती ?

दादा ने कहा - नहीं हर साधना के लिए कुछ विशेष स्थान ज्यादा अनुकूल होते हैं और संभव हो तो वहीं पर साधना करनी चाहिए | तब तक चर्चा करते करते हमारा भोजन समाप्त हो चुका था | हाथ धोने के बाद मैं अपने कमरे में जाकर फिर से बिस्तर पर लेट गया |

दादा थोड़ी देर में मेरे कमरे में आए और उन्होंने मुझे आंख बंद करके बैठने के लिए कहा | मैं बिस्तर पर ही आंख बंद करके बैठ गया | उनका दाहिना हाथ मेरे सर के ऊपर आकर रुक गया और उनके मुंह से मंत्रोच्चार प्रारंभ हो गया | लगभग 5-10 मिनट मंत्रोच्चार किया होगा | उसके बाद मुझे अपना शरीर एकदम हल्का महसूस होने लगा | मेरी इच्छा हो रही थी कि मैं आंख खोल कर देखूँ लेकिन दादा ने मना किया था इसलिए आंख बंद करके बैठा हुआ था |

दादा के हाथ का स्पर्श में अपने सर पर महसूस कर सकता था |

लगभग 15 मिनट के बाद उन्होंने मुझे बाहर दालान में चलने के लिए कहा | दालान जैसा कि पुराने मकानों में होता है, घर के बीच में खुली जगह थी | जहां से सूरज की किरने नीचे आ सकती थी | वहां पर आकर हम दोनों खड़े हो गए मुझे अपना शरीर हल्का फुल्का महसूस हो रहा था | दादा ने मेरा दाया हाथ अपने बाएं हाथ से पकड़ा हुआ था | दालान के बीचो बीच आकर उन्होंने फिर से मुझे अपनी आंखें बंद करने के लिए कहा और कुछ मंत्रोच्चार करने लगे |

वायुगमन और गुरु गोरखनाथ मंदिर

थोड़ी देर बाद मुझे ऐसा आभास होने लगा कि मैं शायद जमीन से ऊपर उठ रहा हूं | मैंने हड़बड़ा कर आंखें खोली तो मैं धीरे-धीरे आसमान की ओर उठता जा रहा था | लगभग जमीन से दो ढाई सौ मीटर की ऊंचाई पर हम दोनों पहुंच चुके थे | उसके बाद दादा ने फिर से मुझे आंख बंद करने के लिए कहा | आँख बंद करते ही एक झटका सा लगा ! मुश्किल से 4 या 5 सेकंड लगे होंगे ! फिर मुझे नीचे उतरने जैसा एहसास हुआ | मैंने देखा तो पूरा नजारा बदला हुआ था | यह एक बिल्कुल नई जगह थी | एक मंदिर बना हुआ था ! उसके सामने हम दोनों खड़े थे | हमारे सामने एक चबूतरा था जिसकी आड़ में हम दोनों वहां पर पहुंचे थे |

दादा मुझे लेकर मंदिर के अंदर गए | वहां उन्होंने मुझे गुरुदेव गोरखनाथ जी के दर्शन करने और मंदिर में बैठकर मंत्र जाप करने का निर्देश दिया | मुझे उस मंत्र की 108 माला जपनी थी |

वह मंत्र था

|| ॐ श्री गोरक्षनाथाय नमः ||

मंदिर के अंदर गूगल की धूप जल रही थी | हल्का-हल्का धुआँ बिखरा पड़ा था | कुछ समय के बाद वह धुआ गहरा होने लगा | ऐसा प्रतीत हुआ जैसे वह धुआँ पूरे मंदिर को अपने घेरे में ले रहा है |

अब वहां पर मंदिर की बजाए एक गुफा दिखाई दे रही थी | उस गुफा में एक दिव्य सन्यासी के दर्शन हुए | जिनके बाल सफेद थे | उनके पास एक लोटे जैसा पात्र रखा हुआ था | वह मृग चर्म पर बैठे हुए थे |

मैंने उनको प्रणाम किया....

उनका एक हाथ आशीर्वाद की मुद्रा में उठा.....

उनकी गंभीर वाणी गूंजी - आगे का मार्ग तुझे घर लौटने के बाद मिलेगा .....

फिर धीरे धीरे धुआँ छटने लगा और वापस मंदिर दिखने लगा | मैं अपने जाप मे लगा रहा | मुझे इसमें लगभग 4 घंटे का समय लगा | इस दौरान मुझे आसपास कहीं भी बनर्जी दादा

दिखाई नहीं दिए | लगभग 4 घंटे के बाद जब मेरा जाप पूरा हो गया तो मैं अपने आसन से उठा | मैंने इधर उधर देखा, लेकिन बनर्जी दादा कहीं भी नहीं दिखाई दे रहे थे ....

मैं मंदिर से बाहर निकला तो मैंने देखा की सीढ़ियों पर छाया बैठी हुई थी .....

मैं आश्चर्य में पड़ गया .....

इसे तो तारापीठ में होना चाहिए | यह यहां कैसे आ गई |

मैं उसकी ओर बढ़ा तब तक उसने भी मुझे देख लिया था | मुझे देखते ही उसने मुझे प्रश्न करने का मौका नहीं दिया | वह मेरा हाथ पकड़ के खींचते हुए उसी चबूतरे के पीछे ले गई जहां पर मैं दादा के साथ आया था | वहां पहुंचने के बाद छाया ने कुछ मंत्रों का उच्चारण किया और हम दोनों फिर से ऊपर की ओर उठ गए | लगभग 10 मिनट के बाद हम लोग दोनों वापस बनर्जी दादा के दलान में मौजूद थे | मुझे वहां छोड़कर छाया फिर से विलुप्त हो गई |

मैंने देखा घर में न तो दादा मौजूद थे और न ही बापी | मुझे आश्चर्य हो रहा था कि बनर्जी दादा और छाया दोनों को वायु गमन की साधना सिद्धि थी | तारापीठ से गोरखपुर की दूरी लगभग सात्त सौ किलोमीटर की थी | जिसे हम लोगों ने मुश्किल से 5 मिनट में तय किया होगा | मैं उस आश्चर्यजनक सफर के बारे में सोचते हुए सपनों की दुनिया में दाखिल हो चुका था |

विचित्र गुफा

मैं गहरी नींद में था | तभी मुझे कमरे में किसी के होने का आभास हुआ | मैंने आंखें खोली तो मैं कमरे के अंदर की बजाए एक विचित्र से गुफा नुमा कक्ष के अंदर लेटा हुआ था | विचित्र इसलिए कि उसकी दीवारें पत्थर जैसी नहीं लग रही थी उसकी दीवार मटमैले रंग की थी | ऐसा प्रतीत होता था जैसे मुरम के पहाड़ को काटकर गुफा बनाई गई हो | गुफा के मुहाने पर बहुत छोटा सा द्वार था | जिसमें से हल्की हल्की रोशनी अंदर आ रही थी | मुझे लगा कि मैं स्वप्न देख रहा हूं | मगर मेरी आंख खुली थी | मैंने खुद को चिकोटी काटकर देखा, वास्तव में वह गुफा ही थी | जहां पर मैं मौजूद था |

मैं आश्चर्य में था कि सोया तो दादा के घर के कमरे में था | अब यह सुबह इस विचित्र गुफा में कैसे हो रही है.....

अभी तो बहुत कुछ देखना बाकी था ...

तभी सामने से छाया आती हुई दिखी । उसे देख कर मुझे थोड़ी राहत मिली ।

आप भी जानते होंगे कि अनजान जगह पर कोई परिचित व्यक्ति अगर मिल जाए तो थोड़ा सुकून सा मिलता है । वह मेरे पास आकर बैठ गई । उसने मुझसे कहा कि तुम स्नानादि नित्य कर्मों से निवृत्त होकर आ जाओ । इस गुफा में हमें श्यामा साधना करनी है ।

मैं गुफा से जब बाहर निकला तो देखा कि वह गुफा एक पहाड़ी में थी । गुफा के मुहाने पर लगभग बीस बाई पंद्रह फुट की जगह रही होगी । सामने पहाड़ी झरना बह रहा था । वह इलाका जंगलों से भरा हुआ था । दूर-दूर तक हरे हरे पेड़ों के अलावा कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था ।

जहां से मैं बाहर निकला था उस गुफा के अलावा वहां कोई दूसरी गुफा भी दिखाई नहीं दे रही थी । पहाड़ी एकदम खड़ी थी । उसपर चढ़ना भी बेहद मुश्किल था । फिर मैं वहां कैसे पहुंचा ... यही सब सोचता हुआ मैं चारों तरफ जायजा ले रहा था ....

पहाड़ी झरने की धार लगभग 20 फीट आगे एक खाई में जाकर गिर रही थी, जो कम से कम डेढ़

सौ फुट गहरी रही होगी । नीचे नुकीली पथरीली पहाड़ियां थीं । उसकी गहराई देखकर मुझे अपने अंदर डर का आभास भी हुआ । वह गहराई इतनी ज्यादा थी कि अगर आदमी फिसल जाए और झरने की धारा के साथ बह जाए तो उसका बचना नामुमकिन था ।

महाश्यामा साधना

मैं नित्य कर्मों से निवृत्त होने के बाद स्नानादि करके दिगम्बर अवस्था मे वापस गुफा में पहुंचा । वहां छाया भी उसी तरह बैठी हुई थी । उसने मुझे अपने सामने बैठने का इशारा किया । मैं जाकर प्रणाम करके बैठ गया ।

आप लोगों ने **तारापीठ की छाया** में पढा होगा कि छाया बचपन से ही तंत्र साधना में प्रवृत्त एक युवती थी । बेहद अल्पायु में ही उसने तारापीठ पर अनेक साधनायें संपन्न की हुई थी । वह तंत्र क्षेत्र की अत्यंत उच्च कोटि की साधिका थी । मेरी उससे मुलाकात तारा साधना के दौरान तारापीठ में हुई थी । जिसके बाद उसने इस साधना का संकेत मुझे दिया था । वहां बनर्जी दादा ने मुझे इस साधना के संबंध में एक स्वलिखित किताब "महाश्यामा साधना" भी प्रदान की थी । इस किताब में इस साधना का पूरा विवरण दिया हुआ था और साधना के अनुभव भी थे , जिसे मैं कई बार पढ़ चुका था । उसने मुझे इस साधना के लिए मानसिक रुप से तैयार होने में काफी मदद की.....अस्तु..

मुझे सामने बैठाकर छाया ने बताना प्रारंभ किया - अघोरानंद ! यह किसी भी साधक और साधिका के लिए गर्व की बात होती है कि वह महा श्यामा साधना पूर्ण कर सकें । इस साधना को पूर्ण करने का मतलब यह होता है कि साधक और साधिका स्वयं में शिव और शक्ति का प्रतिबिंब बन जाते हैं । इस साधना में या तो सफलता मिलती है या फिर मृत्यु प्राप्त होती है । क्या तुम इस साधना को करने के लिए तैयार हो ?

मैंने सहमति में सिर हिलाते हुए अपनी स्वीकृति दी ।

उसने बताया - यह साधना 24 घंटे की साधना है । यह साधना एक ही आसन पर बैठ कर की जाती है । साधना काल में पूरे समय अपनी आंखें खुली रखनी है । आंख बंद करके ध्यान लगाने का प्रयास नहीं करना है । यह एक ऐसी साधना है जिसमें साधक और साधिका को अपने देह और मन पर नियंत्रण रखते हुए विशिष्ट मंत्र का जाप करना पड़ता है । इस दौरान विचलित करने वाली अनेक स्थितियों का

सामना करना पड़ेगा । किसी भी परिस्थिति में न तो अपना आसन छोड़ना है और न ही अपनी आंखें बंद करनी है ।

आपको ज्ञात होगा कि चौसठ योगिनी मंदिर में युगल साधना के दौरान मैं लगभग 36 घंटे के लिए निरंतर साधना में रत हुआ था । यह साधन 24 घंटे की ही थी लेकिन एक ही आसन पर बै रहने की बाध्यता थी जो योगिनी साधना में नहीं थी । साथ ही उसमें परिस्थितियां भी भिन्न थी । यूं कह सकते हैं कि वहां की परिस्थितियां इस साधना की परिस्थितियों से थोडी सरल थी ।

युगल साधना करने का अनुभव मुझे इस साधन में संलग्न होने के लिए भूमिका जैसा काम कर रहा था । मुझे अपने ऊपर आत्मविश्वास पैदा हुआ था कि मैं एक आसन पर लंबे समय तक बैठ साधना कर पाऊंगा ।

छाया ने कुछ मंत्रों का जाप करना प्रारंभ किया जैसे ही मंत्र का जाप प्रारंभ किया । हवा चलने लगी । गुफा थरथराने लगी और थोड़ी ही देर मे

लगभग 12 फुट ऊंची एक स्त्री आकृति उस कक्ष में स्पष्ट हुई ।

वह बुलंद शरीर की स्वामिनी थी और किसी डब्ल्यू डब्ल्यू एफ के महिला पहलवान जैसे दिख रही थी । उसने लाल रंग के वस्त्र धारण किए हुए थे । उसके एक हाथ में चमचमाती हुई तलवार थी । दूसरे हाथ में त्रिशूल जैसा कोई अस्त्र था । तलवार की लंबाई कम से कम 5 फुट रही होगी और उसका फाल लगभग 6 इंच चौड़ा रहा होगा । त्रिशूल भी कम से कम 10 फीट का रहा होगा ।

उसके शरीर में उसकी आंखें सबसे विचित्र थी....

क्योंकि उसके चेहरे में सिर्फ एक आंख थी....

उसके प्रकट होने पर छाया ने उसे कठोर शब्दों में आदेश दिया - एकनेत्रा ! गुफा के द्वार पर जाकर रक्षा करो । साधना पूर्ण होने तक कोई भी किसी हालत में गुफा के अंदर नहीं आना चाहिए ।

वह शक्ति छाया को प्रणाम करके चली गई । उसके जाते ही गुफा का द्वार अपने आप बंद हो

गया । अब बाहर की रोशनी दिखाई नहीं दे रही थी । गुफा के अंदर अंधेरा था ।

यह स्थिति ज्यादा देर नहीं रही । छाया की आंखें अब भी बंद थी और वह कुछ मंत्रोचार कर रही थी । मंत्रोचार करते-करते उसने अपना दाहिना हाथ हवा में उठाया और ऐसा लगा जैसे कोई चीज शून्य से प्राप्त की हो । उसने उसे सामने की तरफ उछाल दिया । उस अज्ञात चीज के उछलते ही गुफा के द्वार से थोड़ा अंदर एक और पत्थर की दीवाल खड़ी हो गयी । यह शायद छाया की तरफ से अतिरिक्त सुरक्षा के रूप में की गई व्यवस्था थी ।

गुफा हल्के नीले प्रकाश से प्रकाशित थी । यह प्रकाश ठीक वैसा ही था जैसा नागमणि से निकलता हुआ प्रतीत होता था ।

छाया ने मुझे बताया - यह साधना विभिन्न मंत्रों के द्वारा की जा सकती है । तुमने रेणु माई के सानिध्य में कामेश्वर मन्त्र के माध्यम से योगिनी साधना की हुई है । इसलिए इस साधना को भी उसी मंत्र के माध्यम से किया जा सकता है । तुम

उस मंत्र का जाप करोगे जो तुम्हें रेनू माई ने दिया है । मैं स्वयं उस मंत्र का जाप करूंगी जिस मंत्र के माध्यम से मैंने योगिनी साधना की थी । मंत्र का जाप मन में करना है इसका उच्चारण नहीं किया जाता । सिर्फ एक बात ध्यान रखना है कि तुम्हारी दृष्टि मेरे गुप्त भाग पर रहेगी और मेरी दृष्टि तुम्हारे गुप्त भाग पर रहेगी । पूरे साधना काल में इसी प्रकार देखते हुए मंत्र जाप करना है ।

पूरी साधना की अवधि में दोनों का अपनी अपनी देह पर नियंत्रण रहना जरूरी है । अगर विचलन तुम्हारे अंदर आया तो भी ! और विचलन अगर मेरे अंदर आया तो भी ! हम दोनों की मृत्यु निश्चित है ! जिसे कोई नहीं टाल सकता ! अभी भी समय है , अगर तुम चाहो तो ही इस साधना को हम प्रारंभ करेंगे ।

मैंने कहा - छाया ! मेरे जीवन में अब साधना ही एकमात्र लक्ष्य है । मेरे गुरुदेव ने जब मुझे इस जगह पर भेजा है तो उनका कोई हेतु रहा होगा । मैं यह मानता हूं कि तुम भी मुझे उन्हीं की कृपा से मिली हो । यह साधना भी उन्हीं की कृपा से

कर पा रहा हूं तो फिर सोचना कैसा ? मेरा पूरा जीवन अब साधना के लिए समर्पित है ।

यदि इस साधना को करते-करते मेरे प्राण चले जाते हैं तो भी कोई बात नहीं । अगले जन्म में मैं फिर से इसके लिए प्रयास करूंगा ।

वैसे मुझे अपने गुरु पर पूरा विश्वास है कि वह मुझे नियंत्रित और संतुलित रखेंगे और इस साधना को पूर्ण करेंगे । तुम्हारी साधनात्मक अवस्था के बारे में भी मैं जानता हूं । इतने उच्च स्तर की साधिका के साथ अगर श्यामा साधना करने का अवसर मुझे मिल रहा है तो भगवती तारा की इच्छा होगी । उनका आशीर्वाद होगा । तभी मैं इस साधना में संलग्न हो पा रहा हूं । बाकी महामाया की इच्छा ...

मेरी बात सुनकर छाया के होठों पर मुस्कान तैर गई ।

उसने कहा - अघोरानंद ! तेरे बारे में जो सुना तुझे वैसा ही पाया । यह पूर्ण रूप से समभाव की साधना है । यहां पर साधक और साधिका दोनों समान भाव में बैठते हैं । इसलिए मैं और

तुम अब मित्रवत है । हम दोनों एक ही भाव भूमि पर स्थित है । इसलिए मैं तुम्हारे समान हूं और तुम मेरे समान हो । इस भाव को लेकर इस साधना को प्रारंभ करना है । सुनने में बहुत सरल है लेकिन वास्तव में यह एक बहुत बड़ा परीक्षण है । अभी सुबह के 7 बज रहे हैं । हम 8 बजे से इस साधना में संलग्न होंगे । कल सुबह 8 बजे तक हमें इसी स्थिति में इस साधना को करना है । मैने सहमति में सिर हिलाया ।

गुफा के भीतर जमीन में एक त्रिकोण बना हुआ था । वह त्रिकोण लगभग 10 फीट की साइज का रहा होगा । उसके ऊपर उसी आकार का एक और त्रिकोण उल्टा बना हुआ था । यह आकृति वैसी ही थी जैसी चौसठ योगिनी मंदिर में साधना के दौरान बनी थी । फर्क सिर्फ इतना था कि यहां पर आकृति पत्थरों पर पहले से बनी हुई थी । उसी प्रकार षटकोण के भीतर हम दोनों एक दूसरे के आमने सामने बैठे ।

छाया ने सबसे पहले भूमि पूजन संपन्न किया

पृथ्वी त्वया धृता लोका.....

श्लोक का उच्चारण पूर्ण हुआ । पंचोपचार पूजन मानसिक रूप से उसने संपन्न किया । इसके बाद दसों दिशाओं का बंधन सहित विभिन्न प्रकार के न्यास भी संपन्न किये । साधना में न्यास करने का मतलब यह होता है कि संबंधित देवी या देवता को हम अपने शरीर में स्थापित करने की प्रक्रिया करते हैं । ताकि हम उस देवी या देवता के समतुल्य बनकर उनको देख सके ! उनके सानिध्य को महसूस कर सकें ! उनके आशीर्वाद को प्राप्त कर सकें !

अगर आज की भाषा में समझे तो हम मोबाइल से इसे समझ सकते हैं । यदि सिग्नल जियो 4G का है और आपका मोबाइल 2G या 3G है तो आप उस नेटवर्क पर नहीं जुड़ सकते । इसके लिए आपको 4G का मोबाइल लेना पड़ेगा । इसे दूसरी भाषा में कहें तो अपने मोबाइल को 4G में अपग्रेड करना पड़ेगा । उसी प्रकार साधक को भी अपने नेटवर्क को अपग्रेड करना पड़ता है ताकि वह हायर लेवल के नेटवर्क के साथ अपना संपर्क स्थापित कर सके । इसे तंत्र की भाषा में न्यास कहते हैं ।

न्यास भी कई प्रकार के होते हैं । जिसमें अंग न्यास और हृदय न्यास प्रमुख है । छाया ने इसके अलावा पीठ न्यास भी संपन्न किया । उसमें भी उसने सृष्टि , स्थिति, संहार तीनों क्रमों का न्यास संपन्न किया । मुझे भी साथ में संपन्न करने का निर्देश दिया ।

वह जैसे जैसे करती जा रही थी मैं भी उसी प्रकार से मंत्रों के साथ अपने अंगों को स्पर्श करता जा रहा था ।

न्यास पुरा होते होते मेरे शरीर का तापमान बढ़ने लगा । ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे बुखार चढ़ गया हो....

न्यास के बाद उसने द्वारपाल क्षेत्रपाल सहित रक्षक देवताओं का आह्वान किया । हर एक रक्षक देवता के आह्वान के साथ वह अपने पात्र से निकालकर एक एक फल उस दिशा में उछाल देती । वह फल हवा में गायब हो जाता । वह फल अजीब से नीले रंग का था जिसे मैंने इससे पहले कभी नही देखा था ।

उस रहस्यमय गुफा की दीवालों पर विभिन्न प्रकार की मूर्तियां बनी थीं । सम्भवतः वे उन्ही रक्षक देवताओं की रही होगी । जिनकी सभी की आंखें अब लाल लाल रंग में चमकने लगी थीं । ऐसा लग रहा था जैसे वे जागृत हो गयी हों ।

पूजन संपन्न होने के बाद मंत्र जाप प्रारंभ होने से पहले उसने आखरी बात कही - इस पूरे साधना काल में मौन रहना है । किसी भी स्थिति में कोई भी आ जाए अपने मौन को नहीं तोड़ना है ।

मैंने पूछा - साधना का समय पूर्ण हो गया है , यह कैसे पता चलेगा ?

वह मेरी ओर देखकर मुस्कुराई जैसे कह रही हो कि यह कैसा बचकाना प्रश्न है ? मैं भी झेंप गया क्योंकि वाकई यह प्रश्न बचकाना ही था ।

साधना का समय हो रहा था और अब साधना आरंभ करनी थी । हम दोनों के बीच में लगभग 2 फीट का अंतर रहा होगा । हम दोनों एक दूसरे को नीले रंग के प्रकाश में स्पष्ट देख सकते थे । उस प्रकाश का स्त्रोत नहीं दिख रहा था । केवल प्रकाश दिख रहा था ।

मैंने गुरुदेव को याद किया उनके श्री चरणों का स्मरण करके गुरु मंत्र का जाप किया और फिर कामेश्वर मंत्र का जाप करना प्रारंभ कर दिया । दोनों का मंत्र जाप चलता रहा ।

आप सोच सकते हैं कि वह स्थिति कितनी कठिन, जटिल और असाध्य सी रही होगी । आप स्वयं पूर्ण यौवन से युक्त है और आपके सामने एक नवयौवना स्त्री बैठी है । दोनों निर्वस्त्र हैं । एक दूसरे के अंगों को देखते हुए ही मंत्र जाप करना है । उसके बावजूद आपके शरीर में किसी प्रकार का विचलन नहीं आना चाहिए । कठिन परीक्षा थी । इस परीक्षा में पास होना अनिवार्य था । क्योंकि ! फेल होने का मतलब था..... मौत !!!!

मंत्र जाप चलता रहा लगभग एक डेढ़ घंटे तक कुछ विशेष अनुभव नहीं हुआ । डेढ़ घंटे के बाद ऐसा लगने लगा कि हम लोग उस गुफा में नहीं है बल्कि अंतरिक्ष में है । चारों तरफ हल्का हल्का प्रकाश फैला हुआ था । यह स्थिति लंबे समय तक वैसी ही बनी रही फिर धीरे-धीरे वापस गुफा दिखाई देने लगी .....

इस साधना में जिस मंत्र का में प्रयोग कर रहा था वह मंत्र मैंने योगिनी साधना में भी प्रयुक्त किया था । उस साधना में यही मंत्र संयुक्त अवस्था में प्रयुक्त हुआ था और नियंत्रित रूप से उत्तिष्ठ रहने के लिए तैयार करने की भूमिका निभा रहा था । वही मंत्र इस साधना के साथ संतुलित और नियंत्रित रहने के लिए उपयोग किया जा रहा था । एकदम विपरीत परिस्थितियां थी यह इसलिए स्पष्ट कर रहा हूं कि मंत्र साधना में कई मंत्र ऐसे होते हैं जो कई प्रकार से प्रयोग किए जा सकते हैं।

इस सारे प्रक्रम में हमारा मंत्र जाप जारी था । लगभग कई घंटों तक कुछ भी विशेष घटित नहीं हुआ । संभवतः मंत्र जाप करते करते दस बारह घंटे हो चुके थे । गुफा पूरी तरह से बंद थी इसलिए समय के विषय में कुछ भी पता नहीं चल पा रहा था । अंदाजे से मुझे ऐसा लग रहा था कि संभवतः दस बारह घंटे बीत चुके होंगे । मंत्र जाप चल रहा था । दोनों की आंखें खुली हुई थी । अभी तक परिस्थितियां नियंत्रण मे थी | मंत्र जाप लगातार जारी था .....

धीरे धीरे गुफा की दीवारें प्रकाशमान होने लगी । ऐसा लग रहा था जैसे खजुराहो के मंदिर में बनी हुई मूर्तियां जीवित होकर उन दीवारों पर प्रकट हो गई हो । चारों तरफ वैसा ही दृश्य दिखाई दे रहा था । हर दृश्य पहले वाले से ज्यादा उत्तेजक और मादकता से भरपूर था । अनियंत्रित होने की हर परिस्थिति मौजूद थी । मुझे अब थोड़ा अनियंत्रित होने जैसा एहसास होने लगा । मैंने तुरंत गुरुदेव को याद किया । गुरु मंत्र का जाप किया । मदनकामेश्वर गुटिका को स्पर्श करते हुए मंत्र जाप आरंभ कर दिया । लगभग आधे घंटे तक गहन गंभीर रतिविलास के बाद वह सारी आकृतियां वापस मूर्ति के स्वरूप मे बदल गई | कुछ देर के बाद गुफा की दीवाल वापस सामान्य हो गई ।

अचानक जो परिस्थितियां बन गई थी । वह अगर लगातार कायम रहती तो मुझे पता नहीं कि स्वयं पर नियंत्रण रख पाता कि नहीं । नग्न देह को देखना एक अलग स्थिति होती है लेकिन विभिन्न मुद्राओं में जीवित जागृत स्थिति विचलन का कारण बन सकती थी । जो भी हो

गुरुदेव के आह्वान मंत्र जाप और कामेश्वर गुटिका के प्रभाव से परिस्थितियां नियंत्रण मे थी ।

हमारा जाप निरंतर चल रहा था । हम दोनों एक दूसरे को देखते हुए निरंतर मंत्र जाप में लिप्त थे । समय का पता नहीं चल रहा था । लेकिन ऐसा आभास हो रहा था कि काफी घंटे बीत चुके थे ।

तभी छाया सामने की तरफ झुकी फिर कभी बाएं तो कभी दाएं झुकने लगी । उसकी आंखों में पीड़ा के भाव दिखाई दे रहे थे । मैं समझ नहीं पा रहा था कि क्या हो रहा है । थोड़ी देर में उसके शरीर पर वैसे निशान दिखाई देने लगे जैसे डंडे से मार पड़ने पर दिखाई देते हैं । लंबी-लंबी लाल लाल लकीरें उभरने लगी । यह क्रम लगभग 10-15 मिनट तक चलता रहा होगा । इस दौरान उसके सारे शरीर में वैसे ही लाल लाल निशान पडते चले गए । संभवतः कोई अदृश्य लाठी उसपर लगातार बार कर रही थी । जिसकी पीड़ा से उसकी आंखों से आंसू निकल जा रहे थे । उस स्थिति में भी उसका मंत्र जाप जारी था ।

थोड़ी देर बाद में मुझे समझ में आया कि कितनी पीड़ा होती है क्योंकि अब मार मुझे पड़ रही थी | ऐसा लग रहा था जैसे मेरे चारों ओर तीन चार लोग खड़े होकर डंडों से मुझे मार रहे हो । मेरे शरीर का कोई भी हिस्सा मार से नहीं बचा था । थोड़ी देर में मेरे शरीर पर भी वैसे ही लाल लाल निशान उभर आए जैसे छाया के शरीर पर उभरे हुए थे।

लगभग 10-15 मिनट के बाद मार की बौछार बंद हो गई । अब फिर से परिस्थितियां सामान्य थी । हम दोनों शांति से मंत्र जाप में लगे हुए थे । दोनों के शरीर पर डंडे के निशान भी मौजूद थे । ऐसा लग रहा था जैसे लाल लाल धारियां प्रिंट हो गई हो । दर्द पूरे शरीर में हो रहा था । ऐसा लग रहा था जैसे शरीर के हर हिस्से में चीटियां काट रही हों । आधे पौन घंटे तक फिर शांति रही । कुछ भी घटित नहीं हुआ । मंत्र जाप जारी रहा । धीरे धीरे हम दोनों शांत होते जा रहे थे । दर्द कम नहीं हो रहा था मगर लगातार होने वाले दर्द की वजह से उसे सहन करने की आदत सी महसूस होने लगी थी ।

अब ध्यान वापस मंत्र जाप की ओर ज्यादा जा रहा था । इस पूरे प्रकरण में हम दोनों ने यथासंभव कोशिश की थी कि मंत्र जाप लगातार जारी रहे और उस कोशिश में काफी हद तक कामयाब भी रहे ।

लगभग 1 घंटे के बाद गुफा में पानी आने लगा । ऐसा लग रहा था जैसे किसी बंद कमरे में नल खुला छूट गया हो । धीरे धीरे फर्श में पानी की परत चढ़ती जा रही थी । पानी बढ़ता बढ़ता हमारी कमर तक आ चुका था । लगभग पाँच से दस मिनट के अंदर अंदर पानी बढ़ता बढ़ता हमारी गर्दन तक पहुंच चुका था । अगर दस मिनट और पानी वैसा ही आता रहता तो संभवत हम लोग पानी में डूब जाते, लेकिन गर्दन तक पहुंचकर वह पानी रुक गया । उसके बाद पानी धीरे-धीरे नीचे उतरने लगा और 15 मिनट के अंदर पूरी गुफा खाली हो गई । ऐसा लग ही नहीं रहा था कि उसमें पानी भी भरा था । फिर लगभग आधे घंटे शांति रही होगी । मंत्र जाप जारी था । अजीब अजीब घटनाक्रम के

बीच में रहने के अपने अनुभवों के कारण उन परिस्थितियों में भी नियंत्रित रह पाया ।

कुछ समय के बाद अचानक कहीं से एक पत्थर आकर मेरे सर पर लगा और सर से खून बहने लगा । कुछ मिनट के बाद दूसरा पत्थर आया और छाया के सर पर लगा । हर पांच दस मिनट में एक पत्थर आता और हम में से किसी के शरीर पर चोट करता । ऐसा लग रहा था जैसे कोई दूर में खड़ा होकर हमारे शरीर को निशाना बनाकर एक के बाद एक पत्थर मार रहा हो । पत्थरों का आकार बहुत बड़ा नहीं था । छोटे कंचों के साइज के पत्थर थे । जो तेजी से आकर हमारे शरीर से टकराते थे कभी सर पर कभी कंधों पर कभी पीठ पर । हर जगह उन पत्थरों का वार जारी था । लगभग 1 घंटे तक यह टॉर्चर चलता रहा । हर पांच दस मिनट में एक पत्थर मुझे या छाया को लगता । फिर 5 मिनट शांति रहती । उसके बाद दोबारा से एक पत्थर आता ।

इस सबके बीच में हमारा मंत्र जाप जारी था । लगभग घंटे भर तक यह पत्थरबाजी चलती रही । उसके बाद फिर शांति स्थापित हो गई

। इस प्रकार की शांति से भी डर लगने लगा था क्योंकि हर बार शांति के बाद फिर एक नई प्रकार की परेशानी सामने खड़ी हो जाती थी ।

इस प्रकार के साधनात्मक परीक्षणों से गुजरते हुए हम लोगों की साधना आगे की ओर बढ़ रही थी । कुछ समय की शांति के बाद मैंने देखा कि यंत्र की रेखाओं से काले रंग के सांप निकलकर आने लगे । वो साँप गहरे काले रंग के थे और उनकी मोटाई मुश्किल से छोटी उंगली के बराबर रही होगी । ऐसा लग रहा था जैसे काले रंग की रस्सी के टुकड़े पूरे गुफा में भर गए हो । उनकी संख्या सैकड़ों में रही होगी ।

धीरे धीरे वे हमारे चारों तरफ इकट्ठे होने लगे ।
अब यह स्थिति थी कि हम दोनों उस यंत्र के ऊपर बैठे हुए थे और उस यंत्र के बाकी बचे हुए हिस्से में वह सांप इधर-उधर मंडरा रहे थे । सांपों की लंबाई मुश्किल से 2 से 3 फुट की ही रही होगी । धीरे-धीरे हम दोनों के शरीर पर चढ़ने लगे कुछ समय में हम दोनों का शरीर सांपों से भर गया । जब वे सांप शरीर के घाव के ऊपर से चलते तो दर्द की गहरी अनुभूति होती । ठीक

वैसी ही जैसी घांव के किसी चीज से रगड़ जाने पर होती है ।

सांप धीरे-धीरे हमारे ऊपर सरकते रहे । कुछ समय के बाद वे सांप धीरे धीरे हमारे शरीर के अंदर जाने लगे । वे एक एक करके वे अंदर प्रवेश करते रहे और विलुप्त होते चले गए । लगभग 1 घंटे के अंतराल में यह सारे साँप उसी प्रकार से शरीर के अंदर सब विलुप्त हो गए ।

कुछ आधा पौन घंटे तक वैसी ही स्थिति रही और उसके बाद सब कुछ शांत हो गया । जैसे वे सारे हमारे शरीर में समाहित हो गए हो । आधे घंटे तक फिर शांति रही और उसके बाद वे साँप शरीर के अलग-अलग छिद्रों से बाहर आने लगे । कुछ साँप मुंह से बाहर निकल रहे थे कुछ नाक से .....

बेहद भयानक दृश्य था । मुझे वहां से उठकर भाग जाने का मन कर रहा था । लेकिन वह संभव नहीं था । वे सांप उसी प्रकार एक एक करके हमारे शरीर से बाहर आ गए । फिर हमारे चारों ओर घेरा बना कर बैठ गए । थोड़ी देर

के बाद वे साँप जिस प्रकार से आए थे । उसी प्रकार से यन्त्र की रेखाओं में समाहित होकर गायब भी हो गए ।

फिर एक बार गुफा लगभग पारदर्शी सी होने लगी । ऐसा लगा कि हम लोग किसी प्रकाश के गोले में बैठे हुए हैं । अनंत अंतरिक्ष में उस प्रकाशमय गोले से किसी अनंत यात्रा पर जा रहे थे । जिसका कोई ओर छोर दिखाई नहीं दे रहा था । हमारे चारों ओर विभिन्न आकाशीय पिंड दिखाई दे रहे थे ।

दिव्य प्रकाशमान स्तंभ

उन सब से परे एक दिव्य प्रकाशमान स्तंभ दिखाई दे रहा था । जो गहरे नारंगी रंग का अत्यंत विशालकाय गोल स्तंभ जैसा था । जिसका न ऊपर कुछ ओर दिखाई दे रहा था और ना ही नीचे का छोर दिखाई दे रहा था । एक ऐसा स्तम्भ जो अग्नि के जैसा नारंगी रंग का था । वह कम से कम 1 किलोमीटर व्यास का रहा होगा । संपूर्ण आकाशीय पिंड उसी के इर्द-गिर्द घूमते हुए प्रतीत हो रहे थे । ऐसा लग रहा था जैसे वह उस संपूर्ण ब्रह्मांड के लिए वही कार्य कर रहा है जो हमारे सौरमंडल के अंदर सूर्य करता है । वह संपूर्ण ब्रह्मांड उसी नारंगी रंग के स्तंभ के आकर्षण में बंधा हुआ गतिशील हो रहा था ।

जिस प्रकाशीय गोले में हम दोनों थे , वह गोला उस स्तंभ की ओर धीरे-धीरे बढा । उसने उस स्तंभ की सात बार परिक्रमा की । हर परिक्रमा के साथ उसका आकार छोटा होता जाता था । सातवीं परिक्रमा पूरी होते-होते उसका आकार राई के दाने जैसा हो गया । उसी अनुपात में हम

भी छोटे होते जा रहे थे । उस अनुपात में पहुंचने के बाद उस स्तम्भ में बारीक शून्य क्षेत्र दिखने लगे थे । जो कि लगभग उसी प्रकाशीय गोले के आकार के थे । सातवीं परिक्रमा के बाद वह प्रकाशीय गोला उस स्तम्भ में बने हुए क्षेत्र से अंदर चला गया ।

उस स्तंभ के अंदर लगभग आधा किलो मीटर व्यास का उसी प्रकार का एक और सफेद रंग का स्तम्भ बना हुआ था । उसी सूक्ष्म आकार में वह प्रकाशीय गोला हमें लेकर उस सफेद स्तंभ के चारों तरफ परिक्रमा करने लगा । उस सफेद स्तंभ से निकलती हुई किरणें उस प्रकाशीय गोले पर लगातार पड रही थी । हम दोनों को बिजली के झटके लगने लगे । आभास बहुत तीव्र नहीं था लेकिन हल्का हल्का झुर्झुरी जैसा आभास जरूर होता था ।

घूमते घूमते मैंने देखा की छाया का शरीर उन किरणों के निरंतर बौछार से धीरे धीरे काले रंग का होता जा रहा है । ठीक उसके विपरीत उन किरणों की बौछार की वजह से मेरा शरीर सफेद रंग का होता जा रहा था । एक स्थिति ऐसी भी

आई जहां पर उस सफेद स्तम्भ के चारों तरफ घूमते घूमते छाया का पूरा शरीर गहरे काले रंग का हो गया और मेरा शरीर एकदम सफेद रंग का हो गया । इतना होने के बाद वह प्रकाशीय गोला जिसमें हम लोग बैठे थे वह उस सफेद रंग के स्तंभ के अंदर समाने लगा ।

हर तरफ सफेद रंग का धुंध जैसा बिखरा पड़ा था । कुछ भी नहीं दिखाई दे रहा था । मुझे छाया भी नही दिखाई दे रही थी । यहां तक कि मेरे शरीर का कोई हिस्सा भी नही दिखाई दे रहा था । हर तरह सफेद रंग का दूधिया धुए जैसा प्रकाश बिखरा पड़ा था । ऐसा काफी देर तक होता रहा । ऐसा लग रहा था जैसे समय थम सा गया हो । इसके बाद अचानक एक झटका सा लगा । धीरे धीरे वह गोला प्रकाशित दिखने लगा । हमारे चारों तरफ बादल दिखाई दे रहे थे । हम उस प्रकाशित गोले के सानिध्य में धीरे-धीरे नीचे की ओर जा रहे थे । करीब 10 से 15 मिनट तक वह प्रकाशीय गोला धीरे-धीरे बादलों के बीच से उतरता रहा । फिर सूर्य की किरणें दिखने लगी ।

अद्भुत दिव्य दर्शन

कुछ समय के बाद सामने जो दृश्य दिखा उस दृश्य की व्याख्या करना मेरे शब्दों के बस की बात नहीं है, फिर भी प्रयास कर रहा हूं .....

वह दिव्य प्रकाशीय गोला हिमालय की श्रृंखलाओं में से होता हुआ कैलाश पर्वत के करीब तक पहुंच चुका था .....

सूर्य की मंद मंद किरणें कैलाश पर्वत के शिखर को स्पर्श करती हुई उनकी स्वर्णिम आभा को बिखेर रही थी .....

कैलाश पर्वत पर विराजमान थे ....

मेरे परम आराध्य !

देवाधिदेव !

जगतगुरु !

दक्षिणामूर्ति !

अघोर मूर्ति !

संहार मूर्ति !

नटराज !

भगवान शिव.....

उस दिव्य तेजस्वी दृश्य को देखकर मैं अभिभूत था .....
निशब्द था .....

मेरे आराध्य भगवान शिव मेरे सामने अपने विराट स्वरूप में कैलाश पर्वत पर विराजमान ।
दाएँ हाथ में त्रिशूल ।
कमर में मृगचर्म ।
गले में सर्प की माला ।
आंखों में करुणा का सागर लिए हुए ।
अपने दिव्य स्वरूप में दिखाई दे रहे थे ।

उनके वाम अंग में थी महा त्रिपुर सुंदरी ,
त्रिलोक की स्वामिनी,
अनंत सूर्यों की आभा को लज्जित कर देने वाला सौंदर्य लिए हुए ,
जगदंबा,
महामाया !!!

जिन की आंखों से वात्सल्य और करुणा का प्रवाह अनवरत बरस रहा था .....

ऐसा लग रहा था कि वक्त वहां ठहर जाए । हम उन श्री चरणों में समाहित हो जाएं । हम दोनों की आंखों से आंसुओं की धारा बह रही थी ।

जो दृश्य सामने था । उसे देख पाना ब्रह्मांड की सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि है ।

इस संपूर्ण ब्रह्मांड के नायक और नायिका अपने संपूर्ण सौंदर्य के साथ आशीर्वाद की मुद्रा में हम दोनों के सामने थे ।

यह स्थिति कुछ 10 या 15 सेकंड तक रही होगी ।

उसके बाद वह प्रकाशीय गोला जिसके अंदर हम लोग बैठे थे महादेव और कैलाश पर्वत की परिक्रमा करने लगा । कुल ग्यारह बार कैलाश पर्वत की परिक्रमा की होगी ।

अंतिम परिक्रमा पूर्ण होने के बाद जब हम लोग पूर्व स्थिति में पहुंचे , तभी महादेव की जटाओं से कुछ दिव्य जलबिंदु हमारी ओर छिटक गए ।

जिनमें से कुछ पानी की बूंदों को मैंने भी एहसास किया ।

जैसे ही वे बूंदे उस प्रकाशीय गोले और हम तक पहुंची वह पूरा दृश्य बदल चुका था । हम वापस अपनी गुफा में उसी षटकोण यंत्र के ऊपर बैठे हुए थे ।

यह एक अद्भुत सपने के टूट जाने जैसा एहसास था ।

जिसकी व्याख्या के लिए यूं समझें कि किसी नन्हे शिशु को जो अपने मां बाप की वात्सल्य भरी थपकियों के बीच लेटा हुआ था उसे उठाकर अचानक पत्थरों पर फेंक दिया गया हो ।
ठीक वैसा ही एहसास उन क्षणों में मुझे हुआ ।

वे क्षण मेरे जीवन की धरोहर है ।
वह दृश्य मेरे जीवन का सौंदर्य है । आनंद है ।मेरे जीवन का सार है ।
अस्तु ...

काफी समय उस दिव्य अनुभव से निकलकर वापस सामान्य होने में लग गए । वापस गुफा

में हम मौजूद थे और वही मद्धम मद्धम प्रकाश गुफा में बिखरा पड़ा था । हम दोनों एक दूसरे के सामने , एक दूसरे को देखते हुए मंत्र जाप में लीन थे ।

उन क्षणों को और उस साक्षात्कार को जीवन के इस सबसे बड़े सौभाग्य को भूल पाना असंभव था । जिसकी पीड़ा हम दोनों की आंखों से आंसुओं की धारा बनकर बह रही थी .....

लगभग आधे घंटे के बाद गुफा में प्रकाश आने लगा ....

गुफा का दरवाजा खुल चुका था .....

हमारी साधना पूर्ण हो चुकी थी ....

प्रकाश की उन किरणों ने हमारी सफलता की घोषणा कर दी थी .....

आनंद और उत्साह के आवेग में हम दोनों ने एक दूसरे को गले लगा लिया !

स्नान आदि के बाद छाया ने फिर मेरा हाथ पकड़ा और कुछ मिनटों में हम वापस दादा के कमरे में प्रकट हो चुके थे !

छाया ने एक बार फिर मुझसे विदा ली और वह उस कमरे से लुप्त हो गयी .....

-समाप्त-

। । श्री सद्गुरु चरणार्पणम । ।

अनिल शेखर "अमस"

अन्य रचनाएँ :-

1. तांत्रिक अघोरानंद ।
2. अघोरानंद की अप्सरा ।
3. अघोरानंद और बलात्कारी प्रेत ।
4. अघोरानंद और तारापीठ की छाया ।
5. अघोरानंद और चौंसठ योगिनी मंदिर का रहस्य ।
6. अघोरानंद और छाया की माया ।
7. अघोरानंद और कमीना प्रेमी ।
8. अघोरानंद और महमारण प्रपंच ।
9. परेतिन की शादी ।

अन्य रचनाएँ :-

1. तांत्रिक अघोरानंद ।
2. अघोरानंद की अप्सरा ।
3. अघोरानंद और बलात्कारी प्रेत ।
4. अघोरानंद और तारापीठ की छाया ।
5. अघोरानंद और चौंसठ योगिनी मंदिर का रहस्य ।
6. अघोरानंद और छाया की माया ।
7. अघोरानंद और कमीना प्रेमी ।
8. अघोरानंद और महमारण प्रपंच ।
9. परेतिन की शादी ।

अन्य रचनाएँ :-

अघोरानंद और छाया की माया (तांत्रिक अघोरानंद) (Hindi Edition)

अनिल शेखर "अमस"

Review this book on Amazon.

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

Customers who bought this book also bought

अन्य रचनाएँ :-

अघोरानंद और छाया की माया (तांत्रिक अघोरानंद) (Hindi Edition)

अनिल शेखर "अमस"

Review this book on Amazon.

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

Customers who bought this book also bought

kindleunlimited

kindleunlimited

अन्य रचनाएँ :-

अघोरानंद और छाया की माया (तांत्रिक अघोरानंद) (Hindi Edition)

अनिल शेखर "अमस"

Review this book on Amazon.

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

Customers who bought this book also bought

kindleunlimited

kindleunlimited

अन्य रचनाएँ :-

अघोरानंद और छाया की माया (तांत्रिक अघोरानंद) (Hindi Edition)

अनिल शेखर "अमस"

Review this book on Amazon.

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

Customers who bought this book also bought

kindleunlimited

kindleunlimited

अन्य रचनाएँ :-

अघोरानंद और छाया की माया (तांत्रिक अघोरानंद) (Hindi Edition)

अनिल शेखर "अमस"

Review this book on Amazon.

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

Customers who bought this book also bought

kindleunlimited

kindleunlimited

अन्य रचनाएँ :-

अघोरानंद और छाया की माया (तांत्रिक अघोरानंद) (Hindi Edition)

अनिल शेखर "अमस"

Review this book on Amazon.

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

Customers who bought this book also bought

kindleunlimited

kindleunlimited

अन्य रचनाएँ :-

अघोरानंद और छाया की माया (तांत्रिक अघोरानंद) (Hindi Edition)

अनिल शेखर "अमस"

Review this book on Amazon.

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

Customers who bought this book also bought

kindleunlimited

kindleunlimited

अन्य रचनाएँ :-

अघोरानंद और छाया की माया (तांत्रिक अघोरानंद) (Hindi Edition)

अनिल शेखर "अमस"

Review this book on Amazon.

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

Customers who bought this book also bought

kindleunlimited

kindleunlimited

अन्य रचनाएँ :-

अघोरानंद और छाया की माया (तांत्रिक अघोरानंद) (Hindi Edition)

अनिल शेखर "अमस"

Review this book on Amazon.

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

Customers who bought this book also bought

kindleunlimited

kindleunlimited

अन्य रचनाएँ :-

अघोरानंद और छाया की माया (तांत्रिक अघोरानंद) (Hindi Edition)

अनिल शेखर "अमस"

Review this book on Amazon.

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

Customers who bought this book also bought

kindleunlimited

kindleunlimited

अन्य रचनाएँ :-

अघोरानंद और छाया की माया (तांत्रिक अघोरानंद) (Hindi Edition)

अनिल शेखर "अमस"

Review this book on Amazon.

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

Customers who bought this book also bought

kindleunlimited

kindleunlimited

अन्य रचनाएँ :-

अघोरानंद और छाया की माया (तांत्रिक अघोरानंद) (Hindi Edition)

अनिल शेखर "अमस"

Review this book on Amazon.

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

Customers who bought this book also bought

kindleunlimited

kindleunlimited

अन्य रचनाएँ :-

अघोरानंद और छाया की माया (तांत्रिक अघोरानंद) (Hindi Edition)

अनिल शेखर "अमस"

Review this book on Amazon.

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

Customers who bought this book also bought

kindleunlimited

kindleunlimited

अन्य रचनाएँ :-

अघोरानंद और छाया की माया (तांत्रिक अघोरानंद) (Hindi Edition)

अनिल शेखर "अमस"

Review this book on Amazon.

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

Customers who bought this book also bought

kindleunlimited

kindleunlimited

अन्य रचनाएँ :-

अघोरानंद और छाया की माया (तांत्रिक अघोरानंद) (Hindi Edition)

अनिल शेखर "अमस"

Review this book on Amazon.

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

Customers who bought this book also bought

kindleunlimited

kindleunlimited

अन्य रचनाएँ :-

1. तांत्रिक अघोरानंद ।
2. अघोरानंद की अप्सरा ।
3. अघोरानंद और बलात्कारी प्रेत ।
4. अघोरानंद और तारापीठ की छाया ।
5. अघोरानंद और चौंसठ योगिनी मंदिर का रहस्य ।
6. अघोरानंद और छाया की माया ।

अघोरानंद और छाया की माया (तांत्रिक अघोरानंद) (Hindi Edition)

अनिल शेखर "अमस"

Review this book on Amazon.

Customers who bought this book also bought

kindleunlimited

kindleunlimited

अन्य रचनाएँ :-

1. तांत्रिक अघोरानंद ।
2. अघोरानंद की अप्सरा ।
3. अघोरानंद और बलात्कारी प्रेत ।
4. अघोरानंद और तारापीठ की छाया ।
5. अघोरानंद और चौंसठ योगिनी मंदिर का रहस्य ।
6. अघोरानंद और छाया की माया ।
7. अघोरानंद और कमीना प्रेमी ।
8. अघोरानंद और महमारण प्रपंच ।
9. परेतिन की शादी ।

अघोरानंद और छाया की माया (तांत्रिक अघोरानंद) (Hindi Edition)

अनिल शेखर "अमस"

Review this book on Amazon.

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

Customers who bought this book also bought

अन्य रचनाएँ :-

1. तांत्रिक अघोरानंद ।
2. अघोरानंद की अप्सरा ।
3. अघोरानंद और बलात्कारी प्रेत ।
4. अघोरानंद और तारापीठ की छाया ।
5. अघोरानंद और चौंसठ योगिनी मंदिर का रहस्य ।
6. अघोरानंद और छाया की माया ।
7. अघोरानंद और कमीना प्रेमी ।
8. अघोरानंद और महमारण प्रपंच ।
9. परेतिन की शादी ।

अघोरानंद और छाया की माया (तांत्रिक अघोरानंद) (Hindi Edition)

अनिल शेखर "अमस"

Review this book on Amazon.

अन्य रचनाएँ :-

1. तांत्रिक अघोरानंद ।
2. अघोरानंद की अप्सरा ।
3. अघोरानंद और बलात्कारी प्रेत ।
4. अघोरानंद और तारापीठ की छाया ।
5. अघोरानंद और चौंसठ योगिनी मंदिर का रहस्य ।
6. अघोरानंद और छाया की माया ।
7. अघोरानंद और कमीना प्रेमी ।
8. अघोरानंद और महमारण प्रपंच ।
9. परेतिन की शादी ।

अघोरानंद और छाया की माया (तांत्रिक अघोरानंद) (Hindi Edition)

अनिल शेखर "अमस"

Review this book on Amazon.

अन्य रचनाएँ :-

1. तांत्रिक अघोरानंद ।
2. अघोरानंद की अप्सरा ।
3. अघोरानंद और बलात्कारी प्रेत ।
4. अघोरानंद और तारापीठ की छाया ।
5. अघोरानंद और चौंसठ योगिनी मंदिर का रहस्य ।
6. अघोरानंद और छाया की माया ।
7. अघोरानंद और कमीना प्रेमी ।
8. अघोरानंद और महमारण प्रपंच ।
9. परेतिन की शादी ।

अघोरानंद और छाया की माया (तांत्रिक अघोरानंद) (Hindi Edition)

अनिल शेखर "अमस"

Review this book on Amazon.

अन्य रचनाएँ :-

1. तांत्रिक अघोरानंद ।
2. अघोरानंद की अप्सरा ।
3. अघोरानंद और बलात्कारी प्रेत ।

अघोरानंद और छाया की माया (तांत्रिक अघोरानंद) (Hindi Edition)

अनिल शेखर "अमस"

Review this book on Amazon.

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

Customers who bought this book also bought

अन्य रचनाएँ :-

अघोरानंद और छाया की माया (तांत्रिक अघोरानंद) (Hindi Edition)

अनिल शेखर "अमस"

Review this book on Amazon.

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

Customers who bought this book also bought

kindleunlimited

kindleunlimited

अन्य रचनाएँ :-

1. तांत्रिक अघोरानंद ।
2. अघोरानंद की अप्सरा ।
3. अघोरानंद और बलात्कारी प्रेत ।
4. अघोरानंद और तारापीठ की छाया ।
5. अघोरानंद और चौंसठ योगिनी मंदिर का रहस्य ।
6. अघोरानंद और छाया की माया ।
7. अघोरानंद और कमीना प्रेमी ।
8. अघोरानंद और महमारण प्रपंच ।
9. परेतिन की शादी ।

अघोरानंद और छाया की माया (तांत्रिक अघोरानंद) (Hindi Edition)

अनिल शेखर "अमस"

Review this book on Amazon.

अन्य रचनाएँ :-

1. तांत्रिक अघोरानंद ।
2. अघोरानंद की अप्सरा ।
3. अघोरानंद और बलात्कारी प्रेत ।
4. अघोरानंद और तारापीठ की छाया ।
5. अघोरानंद और चौंसठ योगिनी मंदिर का रहस्य ।
6. अघोरानंद और छाया की माया ।
7. अघोरानंद और कमीना प्रेमी ।
8. अघोरानंद और महमारण प्रपंच ।
9. परेतिन की शादी ।

अघोरानंद और छाया की माया (तांत्रिक अघोरानंद) (Hindi Edition)

अनिल शेखर "अमस"

Review this book on Amazon.

अन्य रचनाएँ :-

1. तांत्रिक अघोरानंद ।
2. अघोरानंद की अप्सरा ।
3. अघोरानंद और बलात्कारी प्रेत ।
4. अघोरानंद और तारापीठ की छाया ।
5. अघोरानंद और चौंसठ योगिनी मंदिर का रहस्य ।
6. अघोरानंद और छाया की माया ।
7. अघोरानंद और कमीना प्रेमी ।
8. अघोरानंद और महमारण प्रपंच ।
9. परेतिन की शादी ।

अघोरानंद और छाया की माया (तांत्रिक अघोरानंद) (Hindi Edition)

अनिल शेखर "अमस"

Review this book on Amazon.